P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VIII* April-2016

''पर्यावरण संरक्षण में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका''

प्रकाश चन्द्र सोलंकी
शोध छात्र,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
कला, शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर,राज.

सारांश

पर्यावरण शिक्षा द्वारा छात्रों में दृष्टिकोण निर्माण और सहभागिता की भावना का विकास करने में विद्यालय एवं शिक्षक का अमूल्य योगदान हैं। विद्यालय एवं शिक्षक दोनो ही छात्रों द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्धन के प्रति समाज में चेतना उत्पन्न कर सकते हैं। सेवारत एवं सेवानिवृत शिक्षक स्वयं एवं छात्रों के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्धन के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देकर भविष्य में एक महाविभीषिका से आने वाली पीढ़ियों का बचाव कर सकते हैं।

मुख्य शब्द : पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, बंजर भूमि,विशुद्धिकृत पर्यावरण, सन्तुलित पर्यावरण, सक्रिय पर्यावरण, पर्यावरण प्रबन्धन, आध्यात्मिक बुद्धि

प्रस्तावना

विद्यालय पर्यावरण शिक्षा के केन्द्र होते हैं एवं शिक्षक समाज का भविष्य निर्माता एवं सूचना का वाहक होता हैं। शिक्षक का कार्य मात्र सूचना देना ही नहीं बल्कि क्रियाओं को करके दिखाना भी हैं। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण संरक्षण के लिए बेजोड़ भूमिका अदा करती हैं। पर्यावरण शिक्षा के द्वारा भावी नागरिक छात्रों को पर्यावरण का ज्ञान प्रदान किया जाता हैं उसमें दक्षताओं का विकास किया जाता हैं और सबसे बढ़कर उसमें दृष्टिकोण निर्माण और सहभागिता की भावना का विकास करके शिक्षण संस्थाएँ पर्यावरण संरक्षण में समर्थ नागरिकों का निर्माण करती हैं। विद्यालय विभिन्न कार्य करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान करते हैं –

उद्धेश्य

1. पर्यावरण संरक्षण में विद्यालय की भूमिका का अध्यन करना।
2. पर्यावरण संरक्षण में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करना।

विद्यालय का आन्तरिक कार्य (Interal Function of School)

विभिन्न स्तर के विद्यालय अपनी सीमाओं के अन्दर पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं, जो निम्नवत हैं –

1. प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस, 21 मार्च को विश्व वन्य दिवस, अक्टूबर को विश्व प्राकृतिक दिवस तथा 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस का व्यापक आयाजन करके।
2. पर्यावरण संरक्षण के सरकारी, गैर–सरकारी तथा विद्यालय स्तर के कार्यक्रमों को नियमित रूप से संचालित करके।
3. पर्यावरण शिक्षा एवं संरक्षण को एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके छात्र–छात्राओं को शिक्षण प्रदान करना।
4. पर्यावरण प्रदूषण एवं असन्तुलन सम्बन्धी समस्याओं पर शोध कार्य करना।
5. विद्यालय द्वारा पर्यावरण प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजित करके जन सामान्य को प्रशिक्षण प्रदान करना।
6. सेमिनार एवं कार्यशालाएँ आयोजित करना।
7. पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम ओरियन्टेशन कार्यक्रम आयोजित करना।

विद्यालय के बाह्य कार्य (External Function of School)

बाह्य परिसर कार्यों के अन्तर्गत निम्न कार्य किए जा सकते हैं –

1. नगर, गाँव तथा मौहल्ले में स्वच्छता अभियान चलाकर।
2. छात्रों को पर्यटन एवं पर्यावरण सम्बन्धी विधियों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाकर।
3. बंजर भूमि (Wasteland) के संरक्षण की विधियाँ ग्रामवासियों को बतलाकर।
4. पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी नारे और चित्र लिखकर प्रदर्शित करना।
5. वृक्षारोपण कार्यक्रमों तथा वन महोत्सव कार्यक्रम आयोजित करना।

विद्यालय का पर्यावरण सूचना तंत्र के रूप में कार्य
(Function of Schools as Environment Information System)

पर्यावरण सूचना तंत्र के अन्तर्गत सूचनाएँ एकत्र करना, उनकी प्रक्रिया एवं विश्लेषण सम्मिलित हैं। इन्हीं सूचनाओं एवं आँकड़ों के आधार पर योजनाओं

का निर्माण किया जाता रहा हैं। पर्यावरण सम्बन्धी सूचनाएँ राष्ट्रीय स्तर पर एकत्र करने के लिए पर्यावरण सूचना तंत्र (National Environment Information System) की स्थापना आवश्यक हैं। प्राप्त सूचनाओं और आँकड़ों को एकत्र करके उनका मानचित्र तैयार किया जाए और उसे जन सामान्य तक पहुँचाया जाए। इस प्रकार से भौगोलिक सूचना तंत्र(Geographical Information System) भी इसमें अत्यन्त सहयोगी हो सकता हैं।

पर्यावरण मानक एवं सूचक सम्बन्धी कार्य
Functions Related to Environmental Standards and Indices

पर्यावरण के मानक निर्धारण में सूचकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। हानिकारक प्रदूषकों का स्तर सूचकों द्वारा ज्ञात किया जाता हैं। सूचक मूल्य उच्च होने पर पर्यावरण संकट ग्रस्त माना जाता हैं। सूचकों से पर्यावरण का सहिष्णुता स्तर (Tolerence Level) भी ज्ञात किया जाता हैं।

पर्यावरण मूल्यांकन सम्बन्धी कार्य
Functions Related to Environmental Evaluation

पर्यावरण प्रबन्ध एवं संरक्षण और पूर्वानुमान पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन द्वारा ही सम्भव हैं। निगरानी (Monitorin) द्वारा आँकड़ों का एकत्रण तथा विभिन्न तकनीकों द्वारा उनका विश्लेषण करके उसके प्रभाव का मूल्यांकन किया जाना। पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन के परिणाम जनमानस तक पहुँचाकर पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी जागरूकता उत्पन्न की जा सकती हैं और पर्यावरण प्रबन्धन को सरल बनाया जा सकता हैं।

विद्यालय के कार्य विभिन्न पर्यावरणीय संरक्षण के रूप में Functions of School and as Various Environmental forms

बालकृष्ण जोशी के शब्दों में, ''विद्यालय आध्यात्मिक संगठन हैं, जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व हैं। विद्यालय गतिशील सामुदायिक केन्द्र हैं जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता हैं। विद्यालय एक आश्चर्यजनक भवन हैं, जिसका आधार सद्भावना हैं – लोगों की सद्भावना, माता–पिता की सद्भावना, छात्रों की सद्भावना।

के.जी. सैयदैन के मतानुसार, ''नवीन विद्यालय बालक की स्वतंत्रता को बहुत महत्त्व देता हैं। यह इस मनोवैज्ञानिक तथ्य में विश्वास करता हैं कि बालक का विकास तभी होगा जब उसकी जन्मजात शक्तियों और योग्यताओं को परिवेश में पूर्ण स्वतंत्रता मिलेगी।'' इस प्रकार स नवीन विद्यालय बालक को समृद्ध, सक्रिय एवं उल्लासपूर्ण पर्यावरण प्रदान करन का प्रयास करता हैं। ऐसे परिवेश में बालक को विविध खेलों, सामाजिक सहयोग, हस्त कौशल, रचनात्मक कार्य और अपनी रूचि की पुस्तकें पढ़ने का अवसर प्राप्त होता हैं।

विद्यालयों की पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी विभिन्न भूमिकाएँ

विद्यालय सामुदायिक जीवन के केन्द्र के रूप में
School as Centre of Community Life

शिक्षा आवश्यक सामाजिक कार्य हैं। बालक अपने सामुदायिक जीवन में सहभागी बने, इसके लिए विद्यालय उसे प्रशिक्षित करता हैं।

विशिष्ट पर्यावरण के रूप में विद्यालय
School in the Form of Special Environment

विद्यालय एक विशिष्ट परिवेश की रचना करते हैं, जिसमें बालक के वांछित विकास हेतु विशिष्ट प्रकार के जीवन एवं कार्यों की व्यवस्था की जाती हैं, ड्यि (Dewey) के अनुसार विद्यालय के विशिष्ट पर्यावरण में निम्नलिखित तीन विशेषताएँ होती हैं –

विशुद्धिकृत पर्यावरण Purfied Environment

सामाजिक जीवन से केवल शुद्ध और दोषरहित बातों को विद्यालय अपनाता हैं तथा दोषयुक्त बातों को त्याग देता हैं। इस प्रकार विद्यालय के पवित्र परिवेश का बालक के भावी विकास और अच्छे समाज के निर्माण में सहायता मिलती हैं।

सरलीकृत पर्यावरण Simplified Enviorment

विद्यालय का पर्यावरण स्थायी महत्व के जीवन मूल्यों को सरल ढ़ंग से प्रस्तुत करता हैं, जिससे बालक सरलता से समझ सकें।

संतुलित पर्यावरण Balanced Environment

विद्यालय का पर्यावरण सन्तुलित होता हैं वहां सामाजिक एकरूपता होती हैं, परिणामतः बालक संकीर्णताओं से बाहर निकलकर व्यापक विचारों को परिवेश में रहता हैं।

स्कूल रचनात्मक परिवेश के रूप में
School in the form of Creative Enviornment

वर्तमान विद्यालय बालक सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं, यथा प्रायोगिक कार्य, राष्ट्रीय सेवा, एन.सी.सी. खेलकूद आदि पर विशेष ध्यान देते हैं।

स्कूल सक्रिय पर्यावरण के रूप में
Schools in the Form of an Active Environmental

विद्यालय स्फूर्तिमय जीवन का केन्द्र होता हैं। वह अपने चारों ओर की वास्तविकताओं से जुड़ा रहता हैं। टी.पी. नन के अनुसार, ''विद्यालय को मुख्य रूप से ज्ञान प्राप्त का स्थान नहीं, वरन् ऐसा स्थान समझा जाना चाहिए जहाँ बालकों को कुछ प्रकार के कार्यों में प्रशिक्षित किया जाता हैं।''

शिक्षक की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका

वर्तमान में इस बात की महती आवश्यकता है कि शिक्षकों एवं छात्रों द्वारा पर्यावरण सरंक्षण एवं प्रबंधन के प्रति समाज में चेतना उत्पन्न की जाये।पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन में शिक्षक के उत्तरदायित्व इस प्रकार हो सकते हैं

रोल मॉडल

स्वर्गीय राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि, ''सर्वपथम शिक्षक को प्रत्येक क्षेत्र में रोल मॉडल बनना चाहिए।'' पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन के प्रति शिक्षक को स्वयं भी जागरूक हो तथा स्वयं वृक्ष लगाना, साफ–सफाई, नैतिक, चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों को अपने जीवन में अंगीकृत करता हो, तभी छात्र एवं समाज के लोग इन गुणों को अपने जीवन में उतारेंगे।

शिक्षक प्रभाव

''एक विद्यार्थी 12वीं तक की अपनी पढ़ाई के दौरान 25 हजार घंटे स्कूल में व्यतीत करता है और उसका जीवन अपने शिक्षकों से ज्यादा प्रभावित होता है।'' यह बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक का समय

ऐसा होता है जिसमें कि बच्चों में पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंध जैसी विभिन्न आदतों का विकास किया जा सकता है, इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक पर्यावरणीय तकनीकियों की जानकारियों से छात्रों को अवगत करायें तथा उनमें प्रारम्भ से ही नैतिक गुणों एवं अच्छी आदतों का विकास करें।

सांस्कृतिक एवं सामुदायिक कार्यक्रम

शिक्षक समाज को जागरूक करने के लिये कुछ विशेष कार्यक्रम जैसे –एन.सी.सी.,एन.एस.एस., स्काउट–गाईड्स एवं अन्य सभी छात्रों के सहयोग से विद्यालय के अन्दर एवं बाहर नुक्कड़ नाटक, पर्यावरण गीत एवं विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि की सहायता से जन–आंदोलन ला सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषित स्थिति का छात्र प्राकृतिक वेश–भूषा पहनकर प्रचार–प्रसार कर सकते हैं तथा छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा स्वयं समाज में वृक्षारोपण किया जा सकता है।

जागरूकता रैली एवं बोलती दीवारें

समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनचेतना फैलाने के लिये शहरों एवं विशेष तौर से गाँवों की गलियों में जागरूकता रैली निकाल सकते हैं तथा दीवारों पर पर्यावरण से सम्बन्धित उपयुक्त स्लोगन, संरक्षण एवं प्रदूषण की स्थिति के वास्तविक चित्र स्वयं व छात्रों के लिख एवं बना सकते हैं।

अकादमिक कार्य एवं सृजनात्मकता

शिक्षक, विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण में सम्बन्धित लेख, वाद–विवाद प्रतियोगिता, सेमिनार, वर्कशॉप तथा कांफ्रेंस आदि आयोजित कर छात्रों को प्रेरित कर सकते हैं तथा विद्यालय में पत्रिका प्रकाशन का सुझाव दे सकते हैं। जिसमें पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के साथ–साथ उसकी उपयोगिता बढ़ाने के लिये अन्य विषयों के भी लेख हों चाहे उनका स्तर कुछ भी हो, जिससे छात्रों में सृजनात्मकता का विकास भी होगा और पर्यावरण संरक्षण के बारे में मौलिक विचार भी मिलेंगे।

लैब एवं प्रकोष्ठ

विभिन्न विषयों की भाँति विद्यालय स्तर पर भी पर्यावरण शिक्षा के लिये एक लैब तथा प्रकोष्ठ की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि शिक्षक ओ.एच.पी., टी.वी., सी.डी. चार्ट, मॉडल एवं स्वयं प्रयोग/परीक्षण आदि के द्वारा छात्रों को पर्यावरण प्रदूषण के कारण उत्पन्न भयावह दृश्यों व क्रंदन को दिखा व सुना सकें। परिणामतः छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिये संवेदना एवं जिज्ञासा उत्पन्न होगी।

भ्रमण

शिक्षक, छात्रों को भ्रमण के द्वारा प्रदूषण, गन्दी बस्तियों एवं विकराल रूप धारण कर चुके असहाय जीवन जीने को मजबूर व्यक्तियों, परिस्थितियों तथा स्वच्छ वातावरण के द्वारा उत्पन्न शांति, ईमानदारी, साफ–सफाई एवं प्राकृतिक हरियाली को साक्षात रूप में दिखा सकते हैं।

मीडिया

शिक्षक, टी.वी., डिश आदि पर पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यक्रमों, देखने को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिससे छात्र पर्यावरण से सम्बन्धित डाक्यूमेंट्री फिल्म व फोटोग्राफी आदि के द्वारा समय–समय पर होने वाले परिवर्तनों एवं सुधारों से जानकार होते रहेंगे। छात्रों को पर्यावरण से सम्बन्धित मैग्जीन्स, पीरियोडिकल्स, जर्नल्स एवं समाचार–पत्र आदि को पढ़ने एवं जगह–जगह पोस्टर लगान को कहा जाये तथा बाद में किस छात्र ने इनसे क्या ग्रहण किया तथा कार्यक्रम कैसा चल रहा हैं, के लिये 'फॉलोअप प्रोग्राम' चलाया जाये।

प्रोजेक्ट कार्य/क्रियात्मक शोध

शिक्षण पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित छोटे–छोटे प्रोजेक्ट कार्य तथा शीघ्र ही समाधिक होने वाले क्रियात्मक शोध व्यक्तिगत या समूह में दे सकते हैं तथा विद्यालय के अन्य सभी छात्रों का सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। जिससे हमारे पास समूह रूपी ऐसी पौध तैयार होगी जो भविष्य में पर्यावरण के प्रति सचेत एवं संवेदनशील होगी।

आध्यात्मिक बुद्धि (S.Q.)

वर्तमान में समय आ गया हैं कि आध्यात्मिक बुद्धि को बढ़ावा दिया जाये। ''आध्यात्मिकता का अर्थ हैं अपने अस्तित्व का ज्ञान। वह ज्ञान जो हमें बोंध कराये कि हम कौन हैं, क्यों हैं और हमारा उद्धेश्य एवं लक्ष्य क्या हैं।'' अपने आपको जानकर ही हमारी स्वयं, पर्यावरण एवं राष्ट्र के प्रति क्या जिम्मेदारी हैं, को समझ सकते हैं। आध्यात्मिक आन्दोलन से ही पर्यावरण संरक्षित किया जा सकता हैं, क्योंकि हमारे सभी धर्मों ने इसको प्राथमिकता दी हैं। छात्रों में पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्धन के लिए जोश, जज्बा और जुनून विकसित करने एवं योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए एक 'स्प्रिचुअल सर्किल' (आध्यात्मिक मण्डल) का गठन किया जा सकता हैं।

निष्कर्ष

विश्व के यदि सभी सेवारत एवं सेवानिवृत शिक्षक स्वयं तथा छात्रों के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबन्धन के प्रति समाज को जागरूक कर जनचेतना फैलाये तो भविष्य की एक महाविभीषिका से आने वाली पीढ़ियों की रक्षा की जा सकती हैं, क्योंकि शिक्षक का एकल प्रयास ही भविष्य का सामूहिक प्रयास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मूर्ति, डी.बी.एन. : पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण, नेहा पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. कुमार, अभय : भारत में पर्यावरण नीतियां, सुरजीत कार्तिकेयन, पब्लिशर्स।
3. गोयल (डॉ.), एम.के. : पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
4. उपाध्याय, आर.वी. : पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
5. शर्मा, लोकेश : पर्यावरण शिक्षा और उसका शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
6. पाण्डेय, वी.सी. : पर्यावरण शिक्षा, नेहा पब्लिशर्स, नई दिल्ली।